सामाजिक संस्था संपूर्णा

संपूर्ण विकास की ओर अग्रसर

(गैर सरकारी संगठन)

"आलेख"

"कल्पना का परिवर्तित जीवन"

डॉ शोभा विजेंद्र

संपूर्णा संस्थापिका

आज सुबह से ही कल्पना का मन बहुत उत्साहित था। सुबह नित्य कर्म से निवृत्त होकर वह जैसे ही रसोई में पहुंची तो गाना गाने लगी पिया का घर प्यारा लगे....। कल्पना का मन बार-बार प्रेम , अनुराग और उल्लास में हिचकोले ले रहा था। कल रात ही तो कल्पना ने संकल्प लिया था कि अब संपूर्णा परामर्श दाताओं की बात मानकर और सब कुछ भूल कर कल प्रा:त काल से ही पूर्ण रूप से समर्पित होकर घर के मंगल हेतु अपने आप को समर्पित कर दूंगी। कल्पना ने सोचा पढ़ी-लिखी हूं तो क्या हुआ? घर का काम करना इसमें बुरा भी क्या है? बहुत अच्छी नौकरी कर सकती हूं लेकिन बच्चों के लिए सब कुछ छोड़ कर घर को ही अपना सब कुछ मान लिया। कल्पना की मां उसे अक्सर यही तो कहा करती थी। घर में सबकी जरूरतों का ख्याल रखना। उनके लिए अपने बच्चों और घर के लिए सबसे झगड़ा कर लेना , कल्पना की ऐसी आदत थी जिसको कल्पना के सभी रिश्तेदार भलीभांति जानते थे।

बेटा और बेटी को पालने में कल्पना ने कोई फर्क नहीं किया। वह एक पढ़ी-लिखी महिला है और वह यह जानती है कि इस बदलाव की शुरुआत जो उसकी मां ना कर सकी आज उसे करनी है। वह यह सोच ही रही थी कि तभी उसके पति ने आवाज लगा दी। कहां हो कल्पना ? 9:00 बज गए हैं। क्या एक कप चाय का प्याला नहीं मिलेगा ? कल्पना ने चाय बनाई और जल्दी से चाय बना कर पति के पास ले गई। उसने सोचा चलो 2 मिनट चाय पीते-पीते अपने पति से कुछ बतियाऊंगी। वहां जाकर देखा कि पति तो अपने मोबाइल पर लगे हुए हैं। वह कब अपनी चाय ट्रे में से उठाकर बाहर आ गई पति को पता ही नहीं चला। तभी अलसाते हुए उसका बेटा मां के पास आ गया। मां को लगा कि पूछू बेटे रात को नींद अच्छी आई। वह तो बेटे को आवाज ही लगाती रह गई। बेटा क्षण भर के लिए बाहर आया और फिर अपने बेडरूम की ओर चला गया। तभी बेटी आई। कल्पना ने सोचा कि बेटी से बात करके मन हल्का करूंगी। लेकिन देखा कि बेटी के हाथ में तो लैपटॉप है और वह पहले से ही शोर मचाती हुई आई कि मेरी कॉल आ रही है। मां मेरे लिए कुछ नाश्ता बना दो।

50-52 वर्षीय महिला जो एक अधेड़ उम्र की महिला है। जिसने समाज में तेजी से आए परिवर्तन को ना केवल देखा है। बल्कि उसका हिस्सा भी बनी है। वह इस तेजी से बदल रहे लाइफस्टाइल को आत्मसात नहीं कर पा रही है।

लॉक डाउन का समय है सब लोग अपने घरों में बैठे हैं। पति भी लगभग घर पर ही रहते हैं। बेटा और बेटी भी घर से ही ऑफिस का काम करते हैं। कल्पना को लग रहा था कि यह तो बहुत अच्छा समय है। उसने सोचा मै भी अपने आप को इस समय में सजाऊंगी , सवारुगी

और कुछ नया सीखुगी। तभी देखा की घड़ी में 10:00 बज गए हैं। अभी नाश्ते की भी तैयारी नहीं हुई है। लॉक डाउन है ना। सब घर में ही रहते हैं। हर दिन कुछ ना कुछ नया नाश्ता बनेगा तो सबको अच्छा ही लगेगा। यही सोचकर कल्पना काम में लग गई। सब कुछ भूल कर कल्पना इडली और सांभर बनाने लगी । 11:00 बजे सबको आवाज लगाई कहा कि आ जाओ बहुत अच्छा इडली और सांभर नाश्ता बनाया है। बेटा वहीं से अपने बेडरूम से ही चिल्लाते हुए बोला मम्मी आपको बहुत अच्छी इटली और सांभर बनानी आती है। बेटा कहने लगा मेरा ऑफिस शुरू हो चुका है। मम्मी इडली और सांभर मेरे बेडरूम में ही दे जाओ। अभी वह खाने की टेबल पर नाश्ता रखकर इंतजार ही कर रही थी इंतजार करते हुए 15 मिनट बीत गए। कोई नाश्ते के लिए ही नहीं आया। क्या हुआ उसने सोचा जाकर देखूं पति तो बाथरूम से आने का नाम ही नहीं ले रहे। लॉकडाउन है ना। बेटी को हल्के फुल्के में आवाज लगाई बेटी ने कहा आती हूं। मम्मी बहुत काम पड़ा है। मम्मी यही बेडरूम में नाश्ता दे जाओ। भैया को भी तो उनके कमरे में दिया है। कल्पना क्या करती ?

घड़ी में दोपहर के 11:45 बजे थे। उसको भी जोरों से भूख लग रही थी। बहुत परेशान हो रही थी। पुन: पति को आवाज लगाने लगी। पति ने चिल्लाते हुए कहा चिल्लाना बंद करो। तुम अपना नाश्ता कर लो। अंत में कल्पना मायूस सी खाने की टेबल पर आ गई। अपना नाश्ता करने लगी।

हमारे देश में ना जाने कितनी ऐसी कल्पनाएं हैं। जो घर की चारदीवारी में घर के सदस्यों के लिए सब कुछ समर्पित कर देती हैं। लेकिन कुछ समय पश्चात उनको यह अंदाज होता है कि शायद उनके प्रेम , समर्पण को समझने और सराहने के लिए किसी के पास समय ही नहीं है।

कल्पना की एक सहेली मोना ने मुझे बताया कि भारतीय पुरुषों के डीएनए में ही कुछ ऐसा है कि वह स्त्री के अंतर्मन को नहीं समझ पाते।

लॉक डाउन का समय ऐसी सब कल्पनाओ को समर्पित है। जो अपने घर में रहकर अपने घर को स्वर्ग बनाने के लिए अपना सब कुछ न्योछावर करती हैं। और हर अवस्था में ही अनेकों-अनेक यातनाएं सहती हैं। आज का यह आलेख मै उन सभी कल्पनाओं को समर्पित करती हूं जो सामान्य परिवारों में रह रही है। और उन महिलाओं से अनुरोध करती हूं कि सबसे पहले आप थोड़ी थोड़ी अपनी आवाज उठाओ फिर सैकड़ों -हजारों कल्पनाएं मिलकर पुरुषों में मां और पत्नी को सही संदर्भ में देखने की प्रवृत्ति का विकास करेंगे। *ढेर सारी शुभकामनाओं के साथ।* आज के लिए।